8 से 11 वर्ष के बच्चों के लिए

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की स्थापना पुस्तकों के प्रोन्नयन और पठन अभिरुचि के विकास के उद्देश्य से सन् 1957 में भारत सरकार (उच्चतर शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय) द्वारा की गई थी। न्यास द्वारा हिंदी, अंग्रेजी सहित 30 से अधिक भाषाओं व बोलियों में पुस्तकों का प्रकाशन किया जाता है। बच्चों की पुस्तकों का प्रकाशन सदैव से संस्था की प्राथमिकता रही है।

ISBN 978-81-237-8195-2

पहला संस्करण : 2018 (*शक* 1940)

Medhavi Narendra *(Hindi Original)*

₹ 50.00

निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज़-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 द्वारा प्रकाशित
www.nbtindia.gov.in

नेहरू बाल पुस्तकालय

मेधावी नरेंद्र

(स्वामी विवेकानंद के बाल्यकाल के प्रेरक प्रसंगों पर आधारित बाल नाटक)

उमेश कुमार चौरसिया । चित्र : पार्थ सेनगुप्ता



nbt.india
एकः सूते सकलम्

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA



पात्र

सूत्रधार

नरेंद्र/बिलेह

साधु

माता भुवनेश्वरी

पिता विश्वनाथ दत्त

भूगोल के अध्यापक

विज्ञान के अध्यापक

चार-पाँच मित्र

छह विद्यार्थी

स्वामी विवेकानंद

कुछ अन्य बालक

दृश्य–1

सूत्रधार : संपूर्ण विश्व के समक्ष सनातन धर्म का उद्घोष करने वाले स्वामी विवेकानंद के बचपन का नाम नरेंद्र था। माता भुवनेश्वरी उसे स्नेह से बिलेह बुलाया करती थीं। 12 जनवरी, 1863 को कलकत्ता के विश्वनाथ दत्त के घर में जन्मा नरेंद्र बचपन से ही खेल-कूद और आमोद-प्रमोद में रुचि रखता था। घर के आध्यात्मिक वातावरण का उसके मन पर गहरा प्रभाव दिखाई देता था।

(विश्वनाथ दत्त घर में शिव की पूजा-अर्चना कर रहे हैं। पार्श्व से शिव स्तुति के स्वर सुनाई पड़ रहे हैं। माता भुवनेश्वरी भी वहीं खड़ी हैं, नरेंद्र भी धोती-कुर्ता पहने हाथ जोड़े उनके पास खड़े हैं। विश्वनाथ दत्त पूजा-अर्चना संपन्न कर दोनों को प्रसाद देते हैं।)

नरेंद्र : पिता जी, आप किसकी पूजा कर रहे थे?

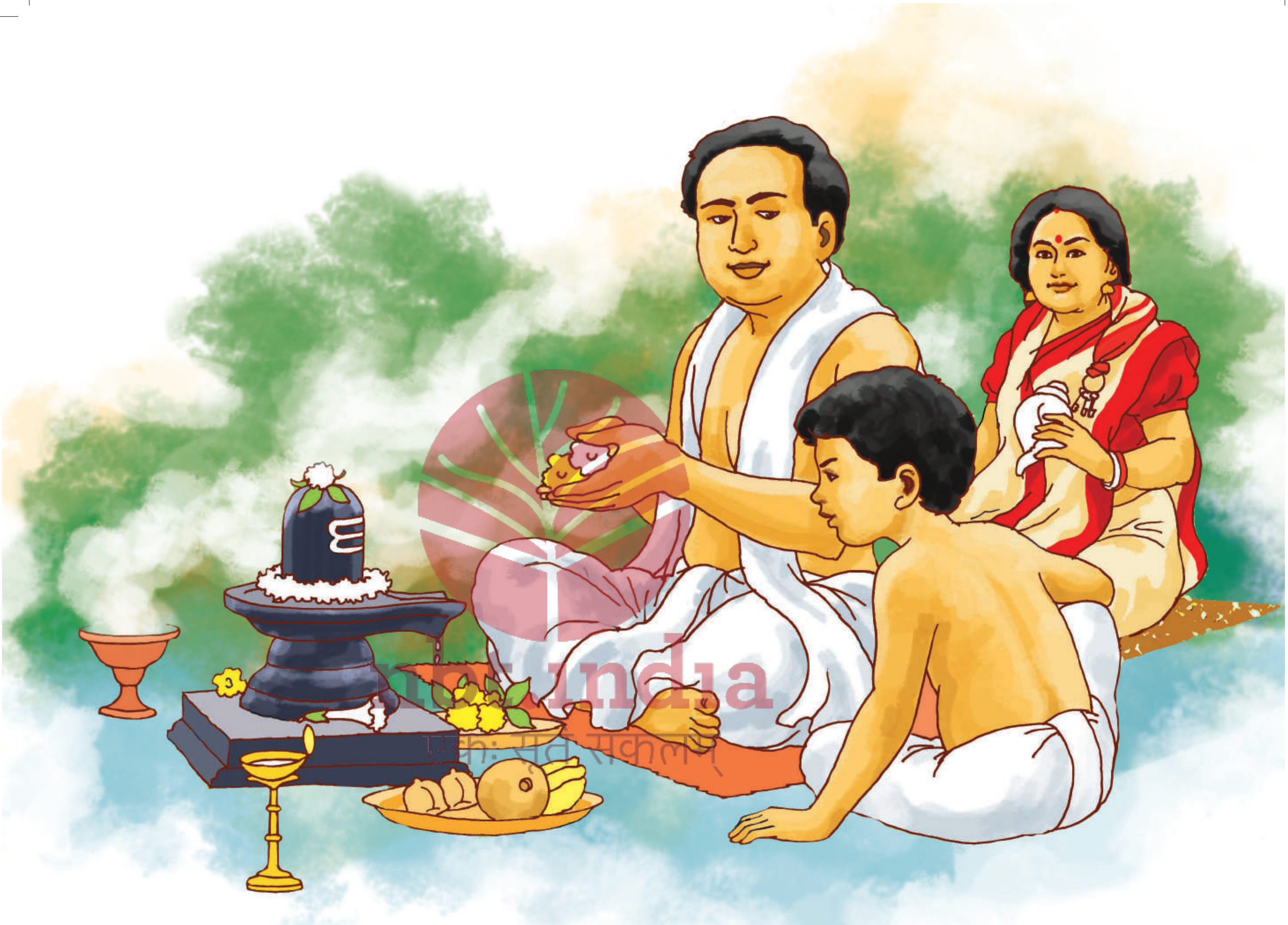
विश्वनाथ दत्त : नरेंद्र, मैं देवाधिदेव शिव की उपासना कर रहा था।

नरेंद्र : शिवजी कौन हैं? वे कहाँ हैं?

भुवनेश्वरी : बिलेह, भगवान शिव तो इस ब्रह्मांड के स्वामी हैं।... वे सब जगह हैं... वे प्रत्येक प्राणी में हैं।

नरेंद्र : शिवजी की उपासना से क्या होता है?

भुवनेश्वरी : शिवजी की आराधना करने से मन को शांति मिलती है, जीवन का मार्ग प्रशस्त होता है, जीवन को श्रेष्ठ बनाने की प्रेरणा मिलती है।



नरेंद्र : शिवजी की उपासना कोई भी कर सकता है क्या, पिता जी?

विश्वनाथ दत्त : हाँ पुत्र, शिवजी तो सबके भगवान हैं। जो भी सच्ची श्रद्धा से उनकी आराधना करता है, शिवजी उस पर कृपा बरसा देते हैं।

नरेंद्र : फिर तो मैं भी शिवजी की उपासना कर सकता हूँ।

भुवनेश्वरी : *(हँसकर)* तुम अभी बहुत छोटे हो बिलेह।

(नरेंद्र चुप खड़ा रह जाता है, पिता व माता भीतर चले जाते हैं। अचानक नरेंद्र कुछ निर्णय करके शिव प्रतिमा के सम्मुख बैठ जाता है और ध्यानमग्न हो जाता है। प्रकाश का घेरा नरेंद्र पर केंद्रित हो जाता है। पार्श्व से शिव स्तुति के मधुर स्वर सुनाई पड़ रहे हैं।)

(दृश्य समाप्त)



दृश्य–2

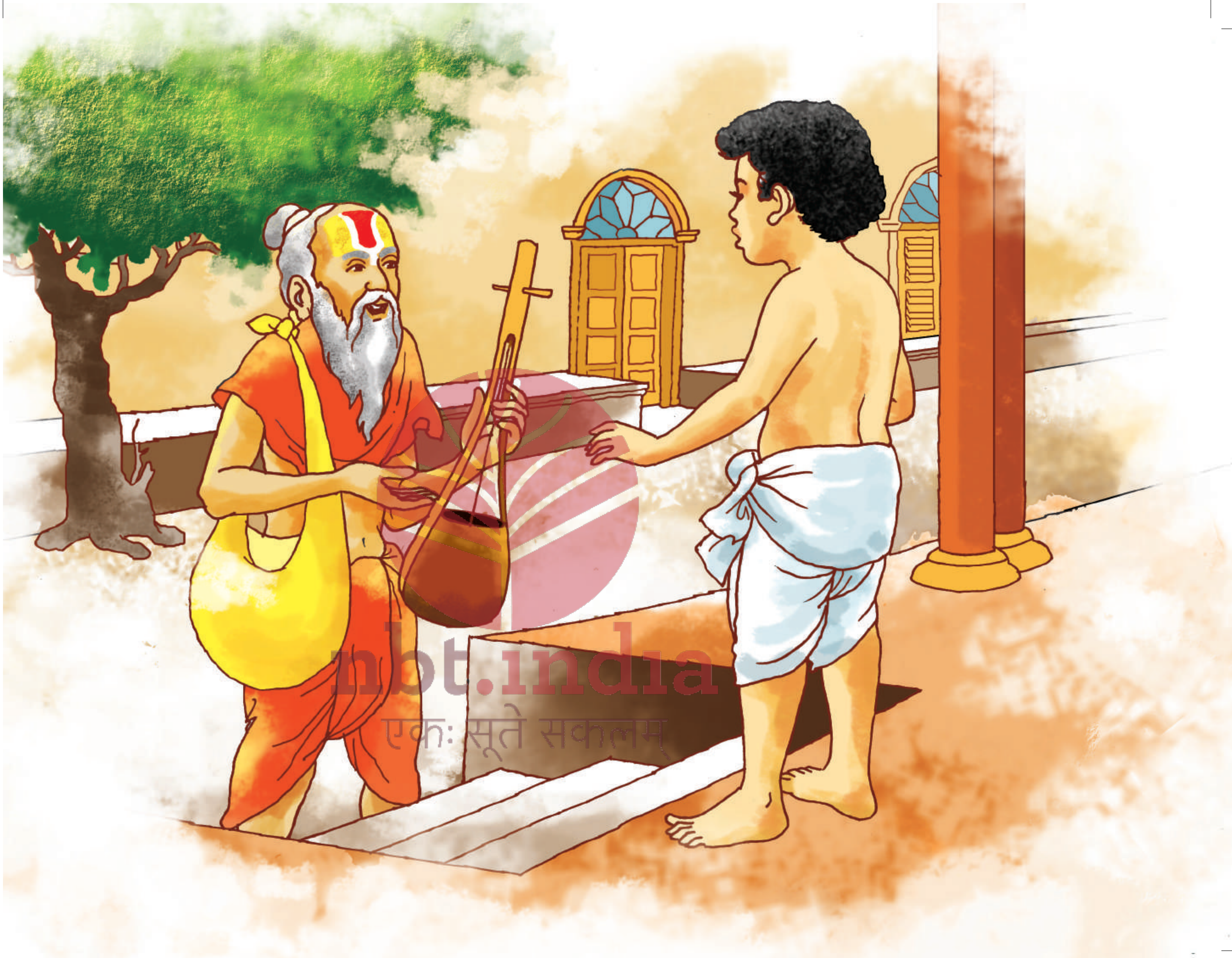
सूत्रधार : नरेंद्र का मन जहाँ पूजा-अर्चना-ध्यान में लगा करता था, वहीं उसके मन में साधु-संतों के प्रति विशेष सम्मान का भाव था। सेवा और त्याग के लिए वह सदैव तत्पर रहता था।

(नरेंद्र के घर का बाहरी बरामदा। सड़क पर एक ओर से एक साधु भजन गाते हुए आता है।)

साधु : मन लागो मेरा यार फकीरी में।
जो सुख पाओ राम भजन में, सो सुख नाहीं अमीरी में।
भला-बुरा सब को सुन लीजै, करि गुजरान गरीबी में।
प्रेमनगर में रहनि हमारी, भलि बनी आई सबूरी में।
हाथ में कुंडी, बगल में सोटा, चारों दिशा जगीरी में।
आखिर यह तन खाक मिलेगा, कहा फिरत मगरूरी में।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, साहिब मिले सबूरी में।
मन लागो मेरा यार फकीरी में।

(साधु वहीं नरेंद्र के घर के द्वार पर खड़ा भजन समाप्त करता है, फिर पुकारता है।)

साधु : भिक्षान्न देहि। माँ... साधु को एक मुट्ठी भिक्षा मिले माँ... भिक्षान्न देहि...



(लगभग 7-8 वर्षीय नरेंद्र, जिसे माता स्नेहपूर्वक बिलेह भी बुलाती है, नई धोती पहने भीतर से द्वार पर आता है।)

नरेंद्र : कहिए साधुबाबा, आपको क्या चाहिए?

साधु : *(मुस्कराकर)* अच्छा बालक... मेरी पुकार सुनकर तुम आए हो?

(नरेंद्र चुपचाप साधु को निहारता रहता है।)

साधु : घर के स्वामी तुम ही हो?

नरेंद्र : नहीं, घर के स्वामी तो मेरे पिता जी हैं।

साधु : *(हँसकर)* मेरे लिए तो तुम ही स्वामी हो। जो याचक की पुकार सुने वही तो स्वामी है।

नरेंद्र : नहीं साधुबाबा। अभी तो मैं बहुत छोटा हूँ।

साधु : एक बालक क्या स्वामी नहीं होता? *(मुक्त कंठ से हँसकर)* बालकृष्ण बालरूप में होने से क्या जगत के स्वामी नहीं हैं?... वे तो त्रिलोक के स्वामी हैं।

नरेंद्र : परंतु मैं इस घर का स्वामी नहीं हूँ।

साधु : चलो मान लिया, तुम इस घर के स्वामी नहीं हो। *(आसमान की ओर देखकर हँसते हैं।)* जो स्वामी नहीं होता, वह स्वयं को स्वामी मानकर अहंकार में फूला रहता है... और जो स्वामी है—वह कहता है कि मैं स्वामी नहीं हूँ।

नरेंद्र : किंतु साधु महाराज, मैं तो वास्तव में इस घर का स्वामी नहीं हूँ।

साधु : *(मुस्कराकर)* मेरे लिए तुम ही स्वामी हो, मैं तो तुमसे ही भिक्षा लूँगा।

नरेंद्र : भिक्षा! *(कुछ पल सोचकर)* अच्छा, मैं अभी लाता हूँ।

साधु : भीतर जाकर माता से माँगोगे?

नरेंद्र : हाँ, तभी तो आपको भिक्षा दे पाऊँगा।

साधु : किंतु मैं तो तुमसे माँग रहा हूँ। मुझे तो वही चाहिए जो तुम्हारा है, केवल तुम्हारा। दूसरे से वस्तु लाकर देना दान नहीं, जो अपना है वही मुझे दे दो।

नरेंद्र : पर मेरे पास तो कुछ नहीं है।

साधु : *(हँसकर)* तुम्हारे पास बहुत कुछ है। तनिक सोचो तो।

(नरेंद्र कुछ क्षण सोचता रहा। फिर अपने दोनों हाथ खोलकर देखे, वे खाली थे। फिर अपने शरीर पर दृष्टि डाली तो जैसे उसे समाधान मिल गया। साधु खड़ा मुस्करा रहा है।)

(नरेंद्र दो पल के लिए भीतर जाता है और अपनी नई धोती खोलकर हाथ में लिये वापस आता है। धोती की जगह नरेंद्र ने कोई कपड़ा लपेटा हुआ है।)

नरेंद्र : ये लो साधु बाबा।... ये नई धोती ही मेरी अपनी है।

(साधु उस धोती को किसी मूल्यवान वस्तु की तरह आँखों और माथे पर लगाकर आह्लादित हो रहा है। फिर उस धोती को सिर पर लपेटकर भजन गाने लगता है।)





साधु : पायो जी मैंने राम रतन धन पायो।
वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु, करि किरपा अपनायो।
जनम-जनम की पूँजी पाई, जग में सबै खोवायो।
खरचे नहिं, कोई चोर न लेवे, दिन-दिन बढ़त सवायो।
सत की नाव खेवटिया सतगुरु, भव-सागर तरि आयो।
मीरां के प्रभू गिरधर नागर, हरखि-हरखि जस गायो।

(भजन गाते-गाते एक ओर चले जाते हैं।)

(दृश्य समाप्त)

दृश्य–3

सूत्रधार : नरेंद्र अपनी असाधारण भाव-भंगिमाओं और प्रत्युत्पन्नमिता से अपने सभी मित्रों को आश्चर्यचकित कर देता था। उसे रोजाना नए-नए खेल खेलने में बड़ा आनंद आता था। कई बार तो नरेंद्र को ऐसे खेल सूझते जिसकी कल्पना भी अन्य साथी नहीं कर पाते थे। ऐसे ही एक दिन जब नरेंद्र मित्रों के साथ खेल रहा था।

(धोती-कुर्ता पहने नरेंद्र अपने कुछ मित्रों के साथ गेंद से खेल रहा है। सभी मित्र गोल घेरा बनाकर गेंद उछालने-पकड़ने का खेल खेल रहे हैं।)

एक मित्र : नरेंद्र, इस खेल में अब मन नहीं लग रहा है।

दूसरा मित्र : हाँ, हमलोग बहुत देर से यही खेल खेल रहे हैं।

नरेंद्र : *(सबको रोककर)* तो फिर आप-हम एक नया खेल खेलेंगे।

तीसरा मित्र : नया खेल?

चौथा मित्र : पर नया क्या खेलेंगे नरेंद्र?

नरेंद्र : हमारा नया खेल है—राजा का खेल।

एक मित्र : राजा का खेल?

दूसरा मित्र : यह कैसे खेलते हैं?



नरेंद्र : देखो, मैं बनूँगा सम्राट, राजा... *(एक मित्र को इंगित करके)* और तुम बनोगे महामंत्री... *(दूसरे मित्र को इंगित करके)* और तुम सेनापति। कुछ लोग सभासद और सिपाही बनेंगे और शेष होंगे फरियादी।... ठीक है ना!

(सभी सहमति में सिर हिलाते हैं।)

तीसरा मित्र : ये ठीक है नरेंद्र।

चौथा मित्र : लगता तो बहुत रुचिकर खेल है।

नरेंद्र : तो फिर शुरू करें?

सभी : हाँ-हाँ, शुरू करो।

नरेंद्र : तो फिर सभी अपनी-अपनी जगह ले लो...

(सभी मित्र महामंत्री, सेनापति, सभासद, सिपाही बनकर दरबार का दृश्य बना लेते हैं। मध्य में नरेंद्र लकड़ी के एक बड़े कुंदे पर बैठकर राजा बनता है। शेष फरियादी बनकर एक कोने में खड़े हो जाते हैं।)

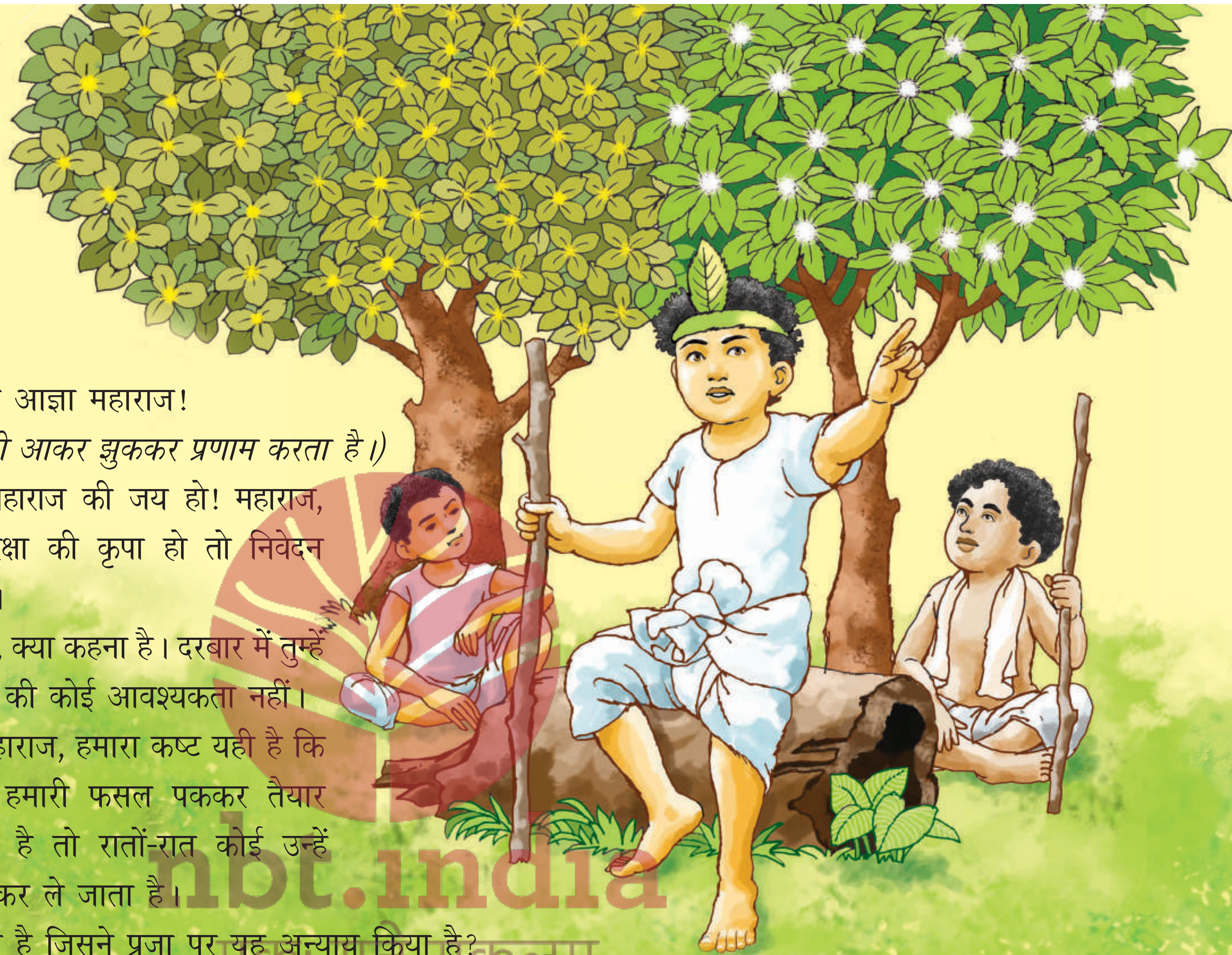
नरेंद्र : *(राजा की तरह)* आज की कार्रवाई आरंभ हो।

महामंत्री : चक्रवर्ती सम्राट, धर्मादित्य राजाधिराज की जय हो!

सभी : महाराज की जय हो, महाराज की जय हो!

महामंत्री : महाराज, आज कुछ प्रजाजन उपहार लेकर आपसे फरियाद करने आए हैं।

नरेंद्र : महामंत्री! राज्य प्रजा से हर वर्ष नियमित 'कर' लेता है, तो फिर प्रजा की रक्षा और उनका पालन-पोषण करना राजा का कर्तव्य है। फिर उपहारों की क्या आवश्यकता!... इसलिए सभी उपहार लौटा दिए जाएँ और फरियादियों को दरबार में आने दिया जाए।



महामंत्री : जो आज्ञा महाराज!

(एक फरियादी आकर झुककर प्रणाम करता है।)

फरियादी : महाराज की जय हो! महाराज, प्राणरक्षा की कृपा हो तो निवेदन करूँ।

नरेंद्र : कहो, क्या कहना है। दरबार में तुम्हें डरने की कोई आवश्यकता नहीं।

फरियादी : महाराज, हमारा कष्ट यही है कि जब हमारी फसल पककर तैयार होती है तो रातों-रात कोई उन्हें काटकर ले जाता है।

नरेंद्र : कौन है जिसने प्रजा पर यह अन्याय किया है?

फरियादी : *(डरते-डरते)* महाराज, जान की अमान हो तो निवेदन करूँ...

नरेंद्र : शीघ्र कहो। *(क्रोधित स्वर)* मुझे शीघ्र बताओ, कौन है वो जो हमारे राज्य में प्रजा को सता रहा है?

फरियादी : *(डरते हुए ही)* महाराज... आपके दीवान साहब की आज्ञा से ये सब हुआ है।

नरेंद्र : क्या, दीवान साहब!... क्या तुम्हें पूरा भरोसा है?

फरियादी : जी महाराज, यही सत्य है।

नरेंद्र : *(तुरंत निर्णय करते हुए)* दीवान को बंदी बनाकर लाया जाए।

महामंत्री : किंतु महाराज, दीवान को बंदी बनाने का नियम नहीं है।

नरेंद्र : तो क्या उन्हें प्रजा पर अत्याचार करने की छूट मिली हुई है... ये मेरी आज्ञा है... दीवान को बंदी बनाकर सजा दी जाए।

फरियादी : महाराज की जय हो...!

सभी : महाराज की जय हो...!!

(तभी एक सैनिक घबराया हुआ दौड़कर आता है।)

सैनिक : महाराज, शत्रु ने आक्रमण कर दिया है... शत्रु ने आक्रमण कर दिया है!

(सभी सभासद, सिपाही, फरियादी उठ खड़े होते हैं।)

नरेंद्र : *(उठकर दृढ़तापूर्वक)* डरने की कोई आवश्यकता नहीं है। मातृभूमि की रक्षा करना हम सबका कर्तव्य है और हम इसमें असफल नहीं होंगे। हम मिलकर शत्रु का मुकाबला करेंगे और निश्चय ही उसे हरा देंगे।

सभी : महाराज की जय हो... महाराज की जय हो!

(दृश्य समाप्त)

दृश्य—4

सूत्रधार : ऐसे ही विनोदी स्वभाव किंतु बुद्धि-कौशल, विवेक और आत्मविश्वासपूर्ण अद्‌भुत क्षमता का परिचय देते हुए नरेंद्र शाला जाने योग्य हुआ। पिता विश्वनाथ दत्त ने नरेंद्र को उत्कृष्ट शिक्षण के लिए कलकत्ता के प्रतिष्ठित विद्यालय मेट्रोपॉलिटन इंस्टिट्यूशन में दाखिला कराया। विद्यालय जाने का पहला दिन भी आ गया।

(माता भुवनेश्वरी व पिता विश्वनाथ दत्त नरेंद्र को नए विद्यालय जाने के लिए तैयार कर रहे हैं। विद्यालय की नई वेशभूषा पहनाई जा रही है—पतलून और कमीज।)

भुवनेश्वरी : देखो, मेरा बिलेह कैसा जँच रहा है नई वेशभूषा में!

नरेंद्र : किंतु मुझे इस पतलून से थोड़ी असुविधा हो रही है माँ।

विश्वनाथ दत्त : आज पहली बार पहनी है न, इसलिए ऐसा लगता होगा।... पर इस वेशभूषा में तुम्हें कोई असुविधा नहीं होगी... पूरे यूरोप के विद्यार्थी ऐसी ही वेशभूषा पहनते हैं।

नरेंद्र : क्या स्कूल जाने के लिए इसे पहनना जरूरी है पिता जी?

विश्वनाथ दत्त : बिलकुल नरेंद्र। विद्यार्थी को चुस्त होना ही चाहिए।

भुवनेश्वरी : और ध्यान रहे, अब तुम छोटे बच्चे नहीं रहे... आठ वर्ष के हो गए हो... तुम्हारा दाखिला भी हमने प्रतिष्ठित विद्यालय में कराया है।

विश्वनाथ दत्त : तुम्हें स्कूल का नाम तो याद है न नरेंद्र?
नरेंद्र : जी पिता जी, मेट्रोपॉलिटन इंस्टिट्यूशन।



विश्वनाथ दत्त : हाँ, यह विद्यालय विख्यात शिक्षक पंडित ईश्वरचंद विद्यासागर जी का है।

भुवनेश्वरी : वहाँ खूब मन लगाकर पढ़ाई करना बिलेह, तुम्हें एक अच्छा विद्यार्थी बनना है। डटकर परिश्रम करना और सारे पाठ अच्छे से सीखना। समझ गए न?

नरेंद्र : हाँ माँ, मैं सब समझ गया।

विश्वनाथ दत्त : इस प्रतिष्ठित स्कूल में इसीलिए भेज रहे हैं ताकि तुम बुद्धिमान और विद्वान बनो।

नरेंद्र : धन्यवाद पिता जी। मैं वचन देता हूँ कि मैं अच्छी तरह पढ़ाई करूँगा और कोई उद्दंडता नहीं करूँगा।

भुवनेश्वरी : शाबाश बिलेह, मैं जानती हूँ तू ऐसा ही करेगा रे।

नरेंद्र : किंतु, पिता जी, मेट्रोपॉलिटन इंस्टिट्यूशन में केवल पढ़ाई ही होती है क्या? वहाँ विद्यार्थी खेलते नहीं हैं?

विश्वनाथ दत्त : *(हँसकर)* ऐसा नहीं है नरेंद्र। पढ़ाई के साथ-साथ वहाँ अनेक प्रकार के खेल भी सिखाए जाते हैं। स्कूल जाने का अर्थ खेल और शारीरिक अभ्यास छोड़ देना नहीं है। विद्यार्थी के बौद्धिक विकास के लिए पढ़ाई जितनी जरूरी है, शारीरिक विकास के लिए खेलकूद भी उतने ही आवश्यक हैं। समझे?



नरेंद्र : *(खुश होकर)* समझ गया। फिर तो मैं भी वहाँ फुटबॉल खेलूँगा। मुझे तो फुटबॉल खेलना ही पसंद है।

विश्वनाथ दत्त : अवश्य! तुम स्कूल टीम में सम्मिलित होकर खूब फुटबॉल भी खेलना।

भुवनेश्वरी : हाँ, लेकिन नित्य की पढ़ाई पूरी करने के बाद।

(सभी हँस पड़ते हैं।)

विश्वनाथ दत्त : *(गंभीर होकर)* एक बात सदैव याद रखना–'श्रद्धा ही परम् गति', इसका अर्थ है सर्वोच्च आदर्श को समर्पित हो जाओ। जो भी करो पूरे समर्पण भाव से, श्रद्धा के साथ करो। इससे तुम्हें यश प्राप्त होगा।

नरेंद्र : हाँ पिता जी, मैं याद रखूँगा।

भुवनेश्वरी : चलो, अब समय हो गया है। तुम्हें विद्यालय के लिए निकलना चाहिए।

नरेंद्र : ठीक है माँ, मैं जाता हूँ।

(नरेंद्र माता व पिता के चरण स्पर्श कर जाने लगता है।)

(दृश्य समाप्त)

दृश्य-5

सूत्रधार : नरेंद्र विद्यालय में होनहार विद्यार्थी के रूप में प्रसिद्ध हो गया था। फुटबॉल टीम में भी अच्छा खिलाड़ी होने के कारण नरेंद्र का प्रमुख स्थान बन गया और वह लोकप्रिय भी हो गया। नरेंद्र बड़ा ही बुद्धिमान बालक था, जो अतिशीघ्र पाठ को समझ भी लेता और पाठ के बिंदुओं का अच्छी तरह विश्लेषण भी करता। एक दिन भूगोल की कक्षा की यह घटना है।

(मेट्रोपॉलिटन इंस्टिट्यूशन में अपनी कक्षा में नरेंद्र व अन्य विद्यार्थी बैठे हुए हैं। भूगोल के अध्यापक आते हैं।)

सभी विद्यार्थी : सुप्रभात सर!

अध्यापक : सुप्रभात! बच्चो, अपनी-अपनी पुस्तकें खोल लीजिए। आज हम भूगोल के छठे अध्याय को सीखेंगे।

(सभी विद्यार्थी पुस्तकें खोलते हैं। अध्यापक बोर्ड पर विश्व का मानचित्र टाँगते हैं।)



अध्यापक : बच्चो, ये विश्व का मानचित्र है। क्या तुम बता सकते हो कि इस मानचित्र में चारों भिन्न-भिन्न दिशाएँ किस ओर हैं? पूर्व दिशा किस तरफ है, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण किस ओर है?... कौन बताएगा?... अच्छा सत्यदेव, क्या तुम बता सकते हो?

सत्यदेव : जी सर, मैं प्रयास करता हूँ।

(सत्यदेव आकर दिशा बताता है।)

सत्यदेव : पूर्व दिशा इस ओर है सर, और उत्तर यहाँ...

अध्यापक : नहीं, ये गलत है। बैठ जाओ।... और कोई बता सकता है?... समीर, क्या तुम्हें पता है?

समीर : *(खड़े होकर)* सर, मुझे पता तो है, पर अभी कुछ याद नहीं आ रहा है।

(सभी हँस पड़ते हैं।)

अध्यापक : चुप रहो! समीर, तुम्हें पुस्तक में याद करना चाहिए था।... बैठ जाओ।... और कौन बता सकता है?

नरेंद्र : *(उठकर)* सर, मैं इसका उत्तर जानता हूँ।

अध्यापक : अच्छा नरेंद्र, इधर आकर बताओ।

(नरेंद्र मानचित्र के पास जाकर सही दिशाएँ बताता है।)

नरेंद्र : सर, पूर्व दिशा यहाँ है, पश्चिम इसके विपरीत इस ओर। उत्तर इधर है और दक्षिण यहाँ पर है।

अध्यापक : शाबाश! बिलकुल सही उत्तर है। नरेंद्र, तुम मुझे एक और प्रश्न का उत्तर बताओ।

नरेंद्र : जी सर, पूछिए।

अध्यापक : बताओ, संयुक्त राज्य अमरीका की राजधानी कौन-सी है?

नरेंद्र : *(विश्वासपूर्वक)* वाशिंगटन।

अध्यापक : क्या यह सही उत्तर है?

नरेंद्र : जी सर, यह सही उत्तर है।

अध्यापक : नहीं, यह गलत उत्तर है।... मैंने तुमसे कितनी बार कहा है कि घर से पुस्तक पढ़कर आया करो, ताकि सही उत्तर बता सको।

नरेंद्र : किंतु सर, मेरा उत्तर गलत नहीं है।... ये गलत हो ही नहीं सकता।

अध्यापक : मुझसे बहस मत करो। मैंने कहा न, तुम्हारा उत्तर गलत है।

नरेंद्र : तो फिर सही उत्तर क्या होगा सर?

अध्यापक : संयुक्त राज्य अमरीका की राजधानी वाशिंगटन नहीं, न्यूयॉर्क है। समझे!

नरेंद्र : नहीं गुरु जी, आपका यह उत्तर गलत है। वाशिंगटन ही सही उत्तर है।

अध्यापक : इतना दुस्साहस! मुझे गलत कहते हो! एक तो सही उत्तर तुम्हें पता नहीं और फिर मेरे बताने पर भी नहीं मान रहे हो। उलटा मेरा उत्तर गलत बता रहे हो। अपने गुरु के साथ अभद्रता करते हो!

नरेंद्र : क्षमा करें गुरुदेव! मैं आपका बड़ा आदर करता हूँ, किंतु आदर करने का अर्थ यह तो नहीं कि संयुक्त राज्य अमरीका की राजधानी आपके कहे अनुसार वाशिंगटन से न्यूयॉर्क हो जाएगी।

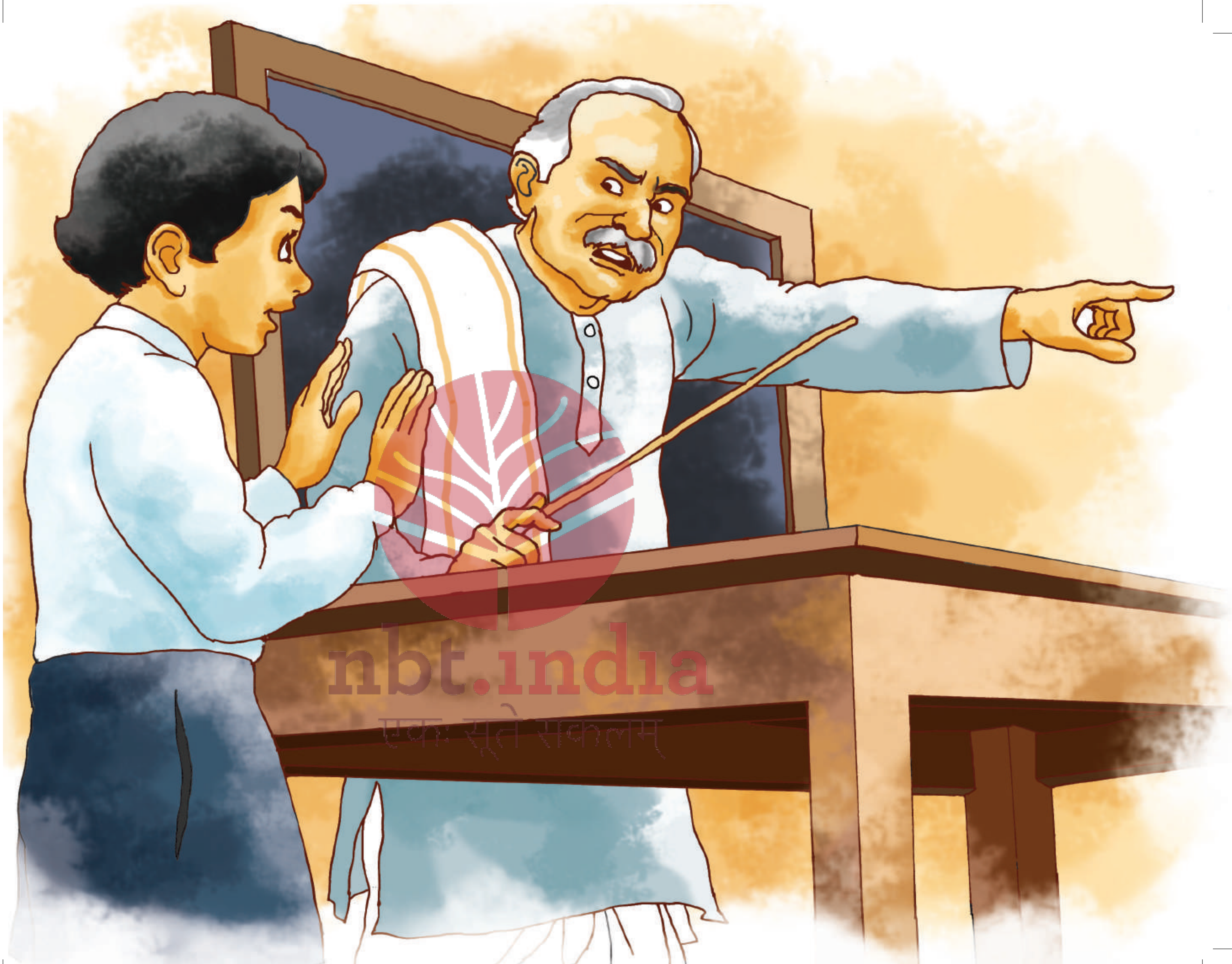
(सभी विद्यार्थी हँस पड़ते हैं।)

अध्यापक : *(क्रोधित होकर)* तुम्हारी इस धृष्टता को मैं क्षमा नहीं कर सकता। जाओ, वहाँ कोने में घुटने के बल बैठ जाओ। तुम्हारी यही सजा है।

नरेंद्र : किंतु सर, जब मैंने कोई गलती की ही नहीं है तो फिर सजा क्यूँ भुगतूँ?

अध्यापक : कैसा निर्लज्ज लड़का है! ये ऐसे नहीं मानेगा। *(मेज पर रखी छड़ी उठाते हैं।)* हाथ आगे बढ़ाओ।

(नरेंद्र चुप खड़ा रहता है।)



अध्यापक : ये मेरी आज्ञा है, हाथ आगे बढ़ाओ।

(नरेंद्र चुपचाप हाथ आगे बढ़ा देता है। क्रोधित अध्यापक छड़ी से उसके हाथों पर लगातार कई प्रहार करते हैं। पीड़ा से नरेंद्र की चीख निकल जाती है।)

अध्यापक : खड़े हो जाओ वहाँ कोने में!

(नरेंद्र चुपचाप एक ओर खड़े होकर अपनी हथेलियों को सहलाता है। दर्द से उसकी आँखों से आँसू टपक रहे हैं। अध्यापक कुरसी पर बैठकर पुस्तक देखने लगते हैं। कुछ पल पुस्तक देखने के बाद चौंकते हैं, नरेंद्र की ओर देखते हैं, फिर उठकर नरेंद्र के पास जाते हैं।)

अध्यापक : *(स्नेहिल स्वर)* नरेंद्र, जाओ, जाकर बैठ जाओ पुत्र। *(सिर पर हाथ से सहलाते हैं)* मुझसे ही त्रुटि हो गई है नरेंद्र। तुम बिलकुल सही हो।... अभी पुस्तक देखने पर मुझे याद आया कि वाशिंगटन ही सही उत्तर है। मुझे खेद है कि मैंने तुम्हें बेवजह डाँटा और मारा भी। मुझे क्षमा कर दो पुत्र।

नरेंद्र : नहीं गुरु जी, ऐसा मत कहिए। आप गुरु हैं। आपको मुझे डाँटने का पूरा अधिकार है।

अध्यापक : अधिकार है, किंतु तभी जब तुम गलत हो। आज तो तुम सही हो नरेंद्र। पता नहीं मेरे मस्तिष्क में न्यूयॉर्क कहाँ से आ गया और मैंने गुस्से में आकर निर्ममता से तुम्हारी पिटाई कर दी।

नरेंद्र : नहीं गुरु जी, ऐसा नहीं है।... संभवतः मेरा ही कहने का तरीका धृष्टतापूर्ण हो गया हो, मेरी वाणी ही कहीं कठोर हो गई हो। मेरा उत्तर ठीक था इसलिए ही मैं अति विश्वास में कुछ कठोर भाषा बोल गया।... मुझे क्षमा करें गुरुदेव।

अध्यापक : मैं इतना अवश्य कहूँगा नरेंद्र कि मेरे इतना क्रोधित होने पर भी तुम अपनी बात पर अडिग रहे।... निस्संदेह सत्य पर अडिग रहना बड़े साहस का कार्य है।

(अध्यापक स्नेहपूर्वक नरेंद्र के सिर पर हाथ रखते हैं।)

(दृश्य समाप्त)

दृश्य—6

सूत्रधार : नरेंद्र कहानी सुनाने में बड़ा माहिर था। नरेंद्र के मुख से निकले शब्द उसके व्यक्तित्व की तरह चुंबकीय थे। इसलिए हर कोई उसकी ओर आकृष्ट हो जाता था। नरेंद्र के सहपाठी तो जैसे कहानी सुने बिना रह ही नहीं सकते थे। विद्यालय में भी वे अकसर नरेंद्र को कहानी सुनाने के लिए विवश कर दिया करते थे। ऐसे ही एक दिन कक्षा में बैठे विद्यार्थी नरेंद्र से कहानी सुनाने का आग्रह करते हैं।

(नरेंद्र को घेरे हुए अन्य विद्यार्थी कक्षा में बैठे हुए हैं। विज्ञान के अध्यापक अभी आए नहीं हैं।)

एक विद्यार्थी : नरेंद्र, एक कहानी और सुनाओ ना।

अन्य विद्यार्थी : हाँ-हाँ नरेंद्र, और कहानी सुनाओ।

नरेंद्र : *(मुस्कराकर)* तुमलोग बड़े लोभी हो गए हो। एक कहानी से तो तुम्हें संतोष ही नहीं होता।

दूसरा विद्यार्थी : तुम कहानी ही इतनी रोचक सुनाते हो कि सुनकर मन आनंदित हो जाता है।

तीसरा विद्यार्थी : कहानी कोई भी हो, पर तुम्हारे मुख से सुनने में ही मजा आता है।

नरेंद्र : किंतु, विज्ञान के अध्यापक अभी आने ही वाले हैं।

एक विद्यार्थी : वे आएँ तब तक तो सुना दो नरेंद्र।

अन्य विद्यार्थी : हाँ नरेंद्र, सुनाओ ना।



नरेंद्र : ठीक है, एक कहानी और सुनाता हूँ। इसके बाद मत कहना।

(सभी हामी भरकर उत्सुकता से सुनने लगते हैं।)

नरेंद्र : सुनो *(कहानी सुनाना आरंभ करता है),* एक बागड़ी स्त्री के पास एक बकरी थी। एक दुष्ट व्यक्ति ने उसकी बकरी चुरा ली और उसका मांस खा गया। उसने उस स्त्री को झूठा विश्वास दिलाया कि उसकी बकरी अचानक आसमान में उड़ गई और अब उसका अमुक गाँव में काजी के रूप में पुनर्जन्म हुआ है। वह स्त्री उस दुष्ट व्यक्ति द्वारा बताये हुए गाँव में पहुँची और वहाँ उसने काजी को कचहरी लगाये हुए देखा। काजी का रंग काला था और उसकी बकरी जैसी दाढ़ी भी थी। स्त्री को विश्वास हो गया कि यह काजी ही उसकी बकरी है। उसने अपनी रस्सी उसकी ओर बढ़ाई और बोली, ''अर्र-र्र, अर्रर हिली... आओ।'' काजी स्त्री के इस व्यवहार से बहुत रुष्ट हुआ। स्त्री को बंदी बना लिया गया। स्त्री से उसके इस व्यवहार का कारण पूछा गया। स्त्री ने सारी घटना सुना दी।

(तभी विज्ञान के अध्यापक का प्रवेश। सभी विद्यार्थी तुरंत अपनी-अपनी जगह पर व्यवस्थित होकर बैठ जाते हैं।)

अध्यापक : बच्चो, विज्ञान की पुस्तक खोल लो। आज मैं तुम्हें विज्ञान के कुछ विशेष सिद्धांतों के विषय में बताऊँगा। सभी ध्यानपूर्वक सुनें।

(अध्यापक श्यामपट्ट पर कुछ लिखने लगते हैं। कुछ विद्यार्थी फिर से नरेंद्र से कहानी पूरी करने का फुसफुसाकर आग्रह करने लगते हैं।)

एक विद्यार्थी : नरेंद्र, कहानी पूरी करो ना।

दूसरा विद्यार्थी : हाँ, वो बकरी का फिर क्या हुआ...

तीसरा विद्यार्थी : उस स्त्री को काजी ने सजा दी या नहीं...

चौथा विद्यार्थी : बताओ ना नरेंद्र।



नरेंद्र : ठीक है सुनो *(धीमी आवाज में सुनाता है)*, जब उस स्त्री ने सारी घटना काजी को सुनाई तो काजी समझ गए कि उस दुष्ट व्यक्ति ने स्त्री के साथ धोखा किया है।

एक विद्यार्थी : फिर क्या हुआ?

नरेंद्र : फिर काजी ने सिपाहियों को भेजकर उस दुष्ट व्यक्ति को पकड़वाया और उसे दंड दिया।

अन्य विद्यार्थी : *(फुसफुसाते हुए)*... वाह, ये तो बड़ी अच्छी कहानी है...

(तभी विज्ञान के अध्यापक का ध्यान उनकी ओर जाता है। वे उन्हें गुस्से से देखते हैं।)

अध्यापक : क्या हो रहा है वहाँ?... सत्यदेव, खड़े हो जाओ।

(सत्यदेव चुपचाप खड़ा हो जाता है।)

अध्यापक : बताओ, मैं क्या पढ़ा रहा था?

(सत्यदेव चुपचाप सिर झुका लेता है।)

अध्यापक : विपिन, खड़े हो जाओ। तुम बताओ, मैं क्या पढ़ा रहा था?

(विपिन भी खड़े होकर चुपचाप सिर झुका लेता है।)

अध्यापक : *(क्रोधित होकर)* कहाँ से बताओगे तुमलोग। तुम्हारा तो ध्यान ही नहीं है पढ़ाई में। मैं इतना महत्वपूर्ण विषय पढ़ा रहा हूँ और तुम सब वहाँ बातें करने में मशगूल हो। सब खड़े हो जाओ। बताओ, मैं क्या पढ़ा रहा था *(सभी सिर झुकाए खड़े हो जाते हैं।)*... नरेंद्र, मुझे लगता है तुम ही इन्हें कहानी सुना रहे थे...। तुम्हारा ध्यान पाठ की ओर बिलकुल भी नहीं है।

नरेंद्र : *(उठकर)* नहीं सर, मेरा ध्यान तो पाठ की तरफ ही है।

अध्यापक : तो तुम बताओ, मैं क्या बता रहा था?

नरेंद्र : *(विनम्रता से)* जी सर, आप हमें न्यूटन के सिद्धांत समझा रहे थे। तीन सिद्धांत हैं और ये वे नियम हैं जो गति, गुरुत्वाकर्षण और ऊर्जा में हमारा मार्गदर्शन करते हैं।

अध्यापक : बिलकुल ठीक। नरेंद्र, यह आश्चर्य की बात है। मैंने स्वयं देखा है कि तुम अपने सहपाठियों को कहानी सुनाने में मग्न थे। फिर कैसे तुमने मेरे पढ़ाये हुए पाठ को इतने सही ढंग से समझा?

नरेंद्र : गुरु जी, मैं कहानी अवश्य सुना रहा था, किंतु फिर भी मेरा ध्यान आपके पढ़ाये हुए पाठ पर ही था।

एक विद्यार्थी : सर, नरेंद्र एक साथ कई चीजों पर एकाग्र होकर उन्हें याद रख सकता है।

दूसरा विद्यार्थी : इसमें अद्‌भुत शक्ति है गुरु जी।

अध्यापक : ठीक है नरेंद्र, तुम बैठ जाओ। किंतु याद रहे, आगे से जब मैं पढ़ा रहा होऊँगा तब तुम सहपाठियों की पढ़ाई में विघ्न नहीं डालोगे... और हाँ, शेष सभी जो सही उत्तर नहीं दे पाए हैं खड़े रहें। सबकी यही सजा है।

(नरेंद्र भी नहीं बैठता है।)

अध्यापक : नरेंद्र, मैंने कहा ना, तुम बैठ जाओ। तुमने ठीक बताया है।

नरेंद्र : नहीं सर, मैं नहीं बैठूँगा। मैं भी इन सभी सहपाठियों के साथ खड़ा रहकर सजा भोगूँगा। इन सबको कहानी मैं ही सुना रहा था। मैंने ही इनको बातों में लगाया था। इसलिए मुझे भी सजा मिलनी ही चाहिए।

(दृश्य समाप्त)



सूत्रधार : नरेंद्र जहाँ सत्य पर अडिग रहकर साहसपूर्वक अपनी बात कहता, गलती नहीं हो तो कभी भी नहीं मानता, वहीं अपनी गलती होने पर उसे सहज स्वीकार करने में उसे तनिक भी संकोच नहीं होता था। नरेंद्र के बाल्यकाल की ये घटनाएँ यही दर्शाती हैं कि भारत का मूल अध्यात्म है। आध्यात्मिक चिंतन-ध्यान से हमें अभूतपूर्व ऊर्जा प्राप्त होती है। विद्यालय जाते समय हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि माता-पिता के प्रति हमारा जो कर्तव्य है, उसका निर्वहन करते हुए पूर्ण निष्ठा से पढ़ाई करें, शिक्षकों का आदर करें, बौद्धिक क्षमता के साथ-साथ शारीरिक क्षमता की अभिवृद्धि का भी ध्यान रखें। खेल-कूद भी जीवन के अभिन्न अंग हैं। स्वामी विवेकानंद बाल्यकाल से युवा. काल तक अपनी अद्भुत क्षमताओं का परिचय देते हुए जीवनभर मानव सेवा और राष्ट्र सेवा के प्रति समर्पित रहे। आज भी मानो स्वामी विवेकानंद हमें यही कह रहे हैं...

(मंच पर प्रकाश के घेरे में स्वामी विवेकानंद खड़े अपनी कविता की पंक्तियाँ बोल रहे हैं।)

विवेकानंद : अटल रहो और वीर बनो!
जीवन में कर्तव्य कठोर है,
सुखों के पंख लग गए हैं,
मंजिल दूर, धुँधली-सी झिलमिलाती है,
फिर भी अंधकार को चीरते हुए बढ़ जाओ,
अपनी पूरी शक्ति और सामर्थ्य के साथ!
भले ही तुम्हारा सूर्य बादलों से ढक जाए,

आकाश उदास दिखाई दे,
फिर भी धैर्य धरो कुछ हे वीर हृदय,
तुम्हारी विजय अवश्य होगी!
तुम्हारी विजय अवश्य होगी!!

(अंतिम पंक्तियाँ गूँजती रहती हैं। धीरे-धीरे प्रकाश लुप्त हो जाता है।)

पटाक्षेप



nbt.india
एकः सूते सकलम्



इंडिका इन्फोमीडिया, नई दिल्ली द्वारा शब्द संयोजन तथा एजुकेशनल स्टोर्स, गाजियाबाद (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित

रंगकर्मी और साहित्यकार **उमेश कुमार चौरसिया** विगत तीन दशकों से अधिक समय से रंगकर्म से जुड़े हैं। हिंदी और राजस्थानी में 80 से अधिक नाटकों, अधिकांशतः बाल नाटक, का लेखन। अब तक विभिन्न विधाओं में लगभग 24 पुस्तकें प्रकाशित। नाट्य निर्देशन के साथ ही फिल्मों का भी निर्देशन तथा निर्माण। दूरदर्शन व आकाशवाणी से नियमित प्रसारण। अनेक पुरस्कार-सम्मान प्राप्त। संप्रति, राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड में अधिकारी।

चित्रकार **पार्थ सेनगुप्ता** कोलकाता के प्रतिष्ठित गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ आर्ट एंड क्राफ्ट से एप्लाइड आर्ट में डिप्लोमा प्राप्त हैं। उन्होंने चित्रकार के रूप में अपने करियर की शुरुआत की और प्रसिद्ध अखबार 'हिंदुस्तान टाइम्स' से जुड़े। न्यास सहित अनेक प्रतिष्ठित प्रकाशन गृहों की पुस्तकों के लिए उन्होंने चित्र बनाए हैं।